नाम – डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम – दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक

विषय – भाषाविज्ञान

शीर्षक – 'वाक्य रचना में परिवर्तन'

# वाक्य- रचना में परिवर्तन

डॉ मोतीलाल शाकार

सहायक प्राध्यापक

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

किसी भाषा की वाक्य- रचना हमेशा एक -सी नहीं रहती। उसमें परिवर्तन आते रहते हैं। इसी तरह मूल भाषा की तुलना में उससे निकली भाषा की वाक्य- रचना में भी परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए संस्कृत वाक्य-रचना में कर्ता या कर्म के लिगं का क्रिया पर प्रभाव नहीं पड़ता है:गच्छति, सीता गच्छति;राम जाता है सीता जाती हैं।

वाक्य-रचना में परिवर्तन के कारण :-

किसी भाषा की वाक्य- रचना में परिवर्तन के मुख्य कारण निम्नांकित हैं:-

1:- अन्य भाषा का प्रभाव:- किसी अन्य भाषा के प्रभाव से भाषा की वाक्य- रचना प्रायः प्रभावित होती है किन्तु ऐसा तभी होता है जब प्रभावित करने वाली भाषा प्रभावित भाषा के बोलने वालों के लिए अत्यावश्यक होकर उनके शिक्षा अथवा व्यवहार का महत्वपूर्ण अंग हो। मध्यकाल में मुगल दरबार की भाषा

फारसी थी, अत: उसका पठन -पाठन काफी होता था। इसी कारण उसका हिन्दी की काव्य-रचना पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

उदाहरण के लिए:-संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश में आदर के लिए बहुवचन के प्रयोग की परम्परा विशेष नहीं थी, किन्तु फारसी में यह परम्परा पूरी तरह से थी। उसी के प्रभावस्वरूप हिन्दी में यह परम्परा आई जिसका परिणाम है:-

मेरा चपरासी आ रहा है।

मेरे अध्यापक आ रहे हैं।

'कि' का प्रयोग भी हिन्दी पर फारसी प्रभाव है-

मैं चाहता हूँ कि वह चला जाए ।

अंग्रेजी नें भी हिन्दी को इसी तरह प्रभावित किया है। कुछ उदाहरण लिए जा सकते। हिन्दी का एक वाक्य है-

वह आदमी जो कल आया था, वह चोर था।

इस वाक्य में 'वह'अंग्रेजी the की छाया है:-

The man who had come yesterday was a thief

हिन्दी का प्राकृत वाक्य होगा :-

जो आदमी कल आया था, चोर था।

इसी प्रकार कई संज्ञाओं या क्रियाओं के एक साथ आने पर अंतिम दो के बीच में 'और' का प्रयोग भी हिन्दी पर अंग्रेजी का प्रभाव है:-

राम, मोहन और श्याम खेल रहे हैं।

मैं शेव करूँगा, नहाऊँगा और खाऊँगा।

भविष्य के लिए अपूर्ण वर्तमान का हिन्दी में प्रयोग भी अंग्रेजी का प्रभाव है। उदाहरण के लिए ऐसे वाक्य खूब चलते हैं:-

(क) प्रधानमंत्री अगले महीने यूरोप जा रही हैं।

(ख) पिता जी कल आ रहे हैं।

(ग) अगले सप्ताह शहर में सरकस आ रहा है।

(हिन्दी वाक्य- रचना पर फारसी और अंग्रेज़ी के प्रभाव विस्तृत रूप से देखने के लिए प्रस्तृतु पंक्तियों के लेखक की पुस्तक 'हिन्दी भाषा' पर अन्य भाषाओं का प्रभाव' शीर्षक अध्याय देखिए)

2:- ध्वनि-परिवर्तन से विभक्तियों और प्रत्ययों का घिस जाना :-

विभक्तियों के घिस जाने से अर्थ को समझने में कठिनाई होने लगती हैं, अतः वाक्य में सहायक शब्द (परसर्ग, सहायक क्रिया) जोड़ जाने लगते हैं, साथ ही वाक्य में पदक्रम निश्चित हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत तथा पुरानी जर्मन की तुलना में हिन्दी तथा अंग्रेजी में शब्द -क्रम निश्चित है:-

राम मोहन कहता है।

मोहन राम कहता है।

इन वाक्यों में स्थान के कारण 'राम' एक स्थान पर कर्ता है तो दूसरे स्थान पर कर्म। संस्कृत में कर्ता 'राम':होता है कर्म 'रामं' । अतः शब्द-क्रम के निश्चित होने की तरह आवश्यकता नहीं थी। 'रामः'वाक्य में कहीं भी आता कर्ता होता तथा 'रामं' कहीं भी आता कर्म होता है।

3:-स्पष्टता तथा बल के लिए अतिरिक्त शब्दों का प्रयोग :- इसके कारण वाक्य में ऐसे अतिरिक्त शब्द आ जातें हैं जो आर्थिक या व्याकरणिक दृष्टि से आवश्यक होते हैं:-

कृपया कल आइएगा।

'आइएगा ' अपने आप आदरसूचक है, अतः ' कृपया ' की आवश्यकता नहीं थी। इसी प्रकार :- He is returning back. में 'बैंक ' अनावश्यक है । संस्कृत , पालि , प्राकृत , अपभ्रंश में विभक्तियों के लुप्त हो जाने पर स्पष्टता के लिए ही परसर्गों का प्रयोग ( हिन्दी आदि आधुनिक भाषाओं में ) होने लगा।

4:- नवीनता :- नवीनता के लिए कभी-कभी नये प्रयोग चल पड़ते हैं। उनसे भी वाक्य- रचना पद्धति में परिवर्तन आते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी में 'मात्र' का प्रयोग संज्ञा के बाद होता रहा है , तब नवीनता के लिए संज्ञा के पहले इसका प्रयोग होने लगा है:-

मुझे दस रुपये मात्र चाहिए: मुझे मात्र दस रुपये चाहिए।

इसी तरह ऐसे विशेषण पदबंध जो संज्ञा शब्दों में पहले आते रहते है , अब बाद में रखे जाने लगे हैं :-

(क) रात भर की बात:बात रात भर की।

(ख) तीन दिन की बादशाहत तीन दिन की।

पुस्तक, रचनाओं तथा फिल्मों के शीर्षक में इस प्रकार परिवर्तन खुब प्रचलित हो गया है , यों अन्यत्र भी इसके प्रयोग कम नहीं मिलते।

5:- बोलने वालों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन:- युद्धकालीन, शांतिकालीन या प्रसन्न व्यक्ति की , दुखी व्यक्ति की वाक्य- रचना एक नहीं होती । वस्तुत : वाक्य- रचना वक्ता की मानसिक स्थिति पर बहुत कुछ निर्भर करती ।

6:- संक्षेप:- नहीं जाता है -नहीं जाता ।

7:- बल के लिए क्रम -परिवर्तन:- जाऊँगा तो -जाऊँ तो गा , कानपुर ही -कान ही पुर ,।

वाक्य- रचना में परिवर्तन की दिशाएँ:-

वाक्य- रचना में परिवर्तन मुख्य रुप से निम्नांकित रूपों या दिशाओं में होता है:-

1) वचन-संबंधी परिवर्तन :- भाषाओं के विकास में वाक्य- रचना में वाक्य- संबंधी परिवर्तन प्रायः हो जाते हैं। संस्कृत में द्विवचन भी था ,अत: दो के लिए अलग कारकरीय रूप होते थे और उसके साथ क्रिया के द्विवचन के रूप प्रयुक्त होते थे , हिन्दी में आते- आते द्विवचन का लोप हो गया तो 'दो ' संख्या ' बहुवचन ' कारकीय रूप में लगाकर द्विवचन का भाव व्यक्त किया जाने लगा ।

| संस्कृत | हिन्दी |
| --- | --- |
| तै | वे दो |
| बालकौ | दो बालक |

किन्तु क्रिया -रूप द्विवचन के स्थान पर बहुवचन के प्रयुक्त होने लगे :-

दो बालक आए हैं।

पुरानी हिन्दी में आदर के लिए भी एकवचन की क्रिया, तथा एकवचन के विशेषण का ही प्रयोग होता था , किन्तु अब हिन्दी में आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग वर्मा (नौकर ) अच्छा है; वर्मा (अध्यापक ) अच्छे हैं । अंग्रेजी में you मूलतः बहुवचन हैं , किन्तु 'अब एकवचन में आता हैं । हिन्दी 'तुम ' की ठीक यही स्थिति हैं ।

2) लिंग -संबंधी परिवर्तन :- संस्कृत में कर्ता या कर्म के लिंग के अनुसार क्रिया परिवर्तित नहीं होती थी , किन्तु हिन्दी में परिवर्तित होती हैं :-

राम:गच्छति=राम जाता है ।

सीता गच्छति=सीता जाती है ।

पहले हिन्दी में स्त्रीलिंग प्रयोग था:-

अब हम जा रही हैं ।

अब प्रायः लड़कियाँ और महिलाएँ प्रयोग करने लगी हैं :-

हम जा रहे हैं

पंजाबी लोग हिन्दी में 'माताजी आ रहे हैं' जैसे प्रयोग करते हैं जो अशुद्ध है ।

3) पुरूष -संबंधी परिवर्तन :- पहले प्रयोग चलता था - राम ने कहा कि मैं जाऊँगा - अब अंग्रेजी के प्रभाव से सुनने में आने लगा है राम ने कहा कि वह जाएगा ।

4) लोप:- पूर्ववर्ती प्रयोगों में कुछ लुप्त हो जाने से वाक्य अपेक्षाकृत छोटे हो जाते हैं। जैसे हिन्दी में :-

प्राचीन प्रयोग - राम नहीं आता है ।

नया प्रयोग - राम नहीं आता ।

प्राचीन प्रयोग - राम नहीं आ रहा है ।

नया प्रयोग - राम नहीं आ रहा ।

प्राचीन प्रयोग - आंखों से देखी घटना ।

नया प्रयोग - आंखों देखी घटना ।

प्राचीन प्रयोग - वह पढ़ेगा- लिखेगा ।

नया प्रयोग - वह पढ़े - लिखेगा नहीं ।

5) आगम :- अतिरिक्त शब्दों के आ जाने से वाक्य बड़े हो जाते हैं । हिन्दी में पुराना प्रयोग था :-

राम ने कहा मैं जाऊँगा ।

फारसी प्रभाव के कारण 'कि' आ गया :-

राम ने कहा कि मैं जाऊँगा ।

हिन्दी का प्राकृत प्रयोग है :-

हिन्दी का प्राकृत प्रयोग है :-

जो लड़का आया था , चला गया ।

अब अंग्रेजी प्रभाव के कारण एक अतिरिक्त शब्द 'वह 'प्रयुक्त होने लगा है :-

वह लड़का जो आया था ,चला गया ।

6) पदक्रम में परिवर्तन :- वाक्य- रचना इससे भी प्रभावित होती है । विभक्ति - लोप , नये प्रयोग आदि के कारण पदक्रम परिवर्तित होता रहता है । संस्कृत और हिन्दी की तुलना करें तो संस्कृत में पदक्रम बहुत निश्चित नहीं था , किन्तु हिन्दी में वह काफी निश्चित हो गया है । यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन है । इधर हाल में भी हिन्दी में पदक्रम - संबंधी कई परिवर्तन हुए हैं । दो का उल्लेख ऊपर हो चुका है :-1)मात्र संज्ञा के पूर्व प्रयोग:- मात्र दस रूपये 2) विशेषण पदबंध का संज्ञा के बाद प्रयोग:- दूल्हन , एक रात की । बल देने के लिए हिन्दी में पदक्रम में काफी परिवर्तन किए जाते हैं:-

घर आ जाऊँगा ।

आज घर जाऊँगा ।

आज जाऊँगा घर ।

' ही ' शब्दों के बाद आता रहा है । अब कभी - कभी शब्दों के बीच में भी सुनने में आता है :-

कानपुर जाना है ।

कान ही पुर जाना है ।